"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री गुरूदास दासगुप्त (पंसकुरा) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री एन. एन. कृष्णदास (पालघाट) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री बीर सिंह महतो (पुरूलिया) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री हितेन बर्मन (कूचबिहार) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री सनत कुमार मंडल (जयनगर) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री जोवाकिम बखला (अलीपुरद्वार) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा पेश किया गया और श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा समर्थित प्रस्ताव सभा के विचारार्थ प्रस्तुत है। मैं इस प्रस्ताव को सभा के मतदान के लिए रखता हूं।

प्रश्न यह है :

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और श्री सोमनाथ चटर्जी को इस सभा का अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया जाता है। अब मैं उन्हें सहर्ष आमंत्रित करता हूं कि वह आकर अध्यक्ष का आसन ग्रहण करें।

(प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह, सदन के नेता श्री प्रणव मुखर्जी और विपक्ष के नेता, श्री लाल कृष्ण आडवाणी श्री सोमनाथ चटर्जी को अध्यक्षपीठ तक ले गए)

पूर्वाह्न 11.29½ बजे

अध्यक्ष महोदय (श्री सोमनाथ चटर्जी) पीठासीन हुए।)

पूर्वाह्न 11.30 बजे

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय को बधाई

प्रधानमंत्री (डा. मनमोहन सिंह) : माननीय अध्यक्ष महोदय, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एक बार कहा था कि राज्य के मामले में व्यक्ति को संवदेनशील तो होना चाहिए पर भावुक नहीं। आप मुझे इस अवसर पर कुछ भावुक होने के लिए क्षमा करें।

50 वर्ष पहले, जब मैंने महाविद्यालय से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी तथा डिग्री प्राप्त की थी तब आपके पिताजी ने दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता की थी और आज, महोदय, जब मैं नया पदभार ग्रहण करने वाला हूं तो आप इस आसन पर हमारे मार्गदर्शक, मित्र और दार्शनिक के रूप में विराजमान हैं।

महोदय, इस सम्मानित सभा का सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने पर मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से आपको बधाई देता हूं और आपका अभिनन्दन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, आप तीन दशक से भी अधिक समय से इस सम्मानित सभा के जाने--माने सदस्य रहे हैं। कुछ वर्ष पूर्व, इस सभा के सदस्यों ने सभा की कार्यवाही में आपके व्यापक योगदान को देखते हुए आपको उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार से सम्मानित किया था, जो कि सर्वथा उचित है, और अब इन्हीं सदस्यों ने एक बार फिर आपको इस सम्मानित सभा का सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना है।

महोदय, एक सांसद के रूप में आपका जीवन और कृत्य हममें से कई लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं। आपकी तरह, मैंने सदैव इस बात में विश्वास किया है कि राजनीति को सामाजिक परिवर्तन के एक साधन के रूप में लिया जाना

चाहिए। इस परिकल्पना को साकार करने के लिए इस सम्मानित सभा के सदस्यों की बहुत अधिक जिम्मेदारी है और महोदय हमने स्वयं के मार्गदर्शन के लिए आपके रूप में एक बहुत ही कुशल पथ प्रदर्शक पाया है। मेरी पार्टी तथा संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन के सदस्य वाद–विवाद, चर्चा के स्तर में सुधार लाने तथा हमारी कार्यवाहियों के विधायी कार्यों की दिशा में किये जाने वाले कार्यों में सदैव आपके साथ होंगे।

अध्यक्ष महोदय, यह सभा हमारे विशाल और बहुलतावादी राष्ट्र की विविधता को परिलक्षित करती है और यहां होने वाले वाद–विवाद हमारे लोकतंत्र में मत की भिन्नताओं को व्यक्त करते है। तथापि, जिस तरह से हमारी सभा की कार्यवाहियों का संचालन होता है और जनता से किये गये अपने वायदों को पूरा करने के लिए हम जिस तरह से स्वयं को प्राप्त समय का सदुपयोग करते हैं, उसी से यह तय होता है कि राष्ट्र निर्माण के अपने पावन प्रयास में हम कितने प्रभावकारी ढंग से अपना योगदान कर सकते हैं।

महोदय, आपकी बुद्धिमता तथा हमारे गणतंत्र और इसके आदर्शों के प्रति आपकी वचनबद्धता को देखते हुए, मुझे पूरा विश्वास है कि आप इस सभा की कार्यवाही का संचालन हमारे महान लोकतंत्र की उच्चतम परम्पराओं को ध्यान में रखकर करेंगे। महोदय, मैं संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन और अपनी पार्टी की और से आपको पूरी तरह से और वास्तविक रूप से सहयोग देने का आश्वासन देता हूं। अध्यक्ष महोदय, मैं हृदय से कामना करता हूं कि आप हमें प्रदत्त समय का सार्थक उपयोग करने में अपने दायित्व का अच्छी तरह निर्वहन कर सकें ताकि हम जनता से किये गये अपने वायदों को पूरा कर सकें, अपने लोगों, विशेषकर समाज के वंचित लोगों के जीवन में आशा की किरण ला सकें। हम अपने राष्ट्र को एक आधुनिक, प्रगतिशील, खुला, धर्मनिरपेक्ष और उदार लोकतंत्र तथा न्याय पर आधारित समाज की दिशा में अग्रसर करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। महोदय, आपके मार्गनिर्देशन में यह सभा राष्ट्र को निराश नहीं करेगी। मुझे पूरा भरोसा है कि यहां पर किया जाने वाला विचार–विमर्श तार्किकता और दया भावना पर आधारित होगा और यह शासन की प्रक्रियाओं में कुशलता और समानता दोनों के प्रति गहन वचनबद्धता को दर्शायेगा।

महोदय, हमें अपने आदर्शवाद के उन उच्च मानदंडो को दोहराना होगा जिन्होंने हमारे स्वतंत्रता संघर्ष को प्रेरित किया। इस आदर्शवाद को रवीन्द्रनाथ टैगोर की इस कविता में सर्वोत्तम ढंग से व्यक्त किया गया है और मैं इस प्रार्थना के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा कि हम अपने विचार–विमर्श में आपके विशिष्ट मार्गनिर्देशन के अंतर्गत इस कविता में प्रतिध्वनित उच्च आदर्शों पर खरे उतर सकें :–

"ह्वेयर दि माइन्ड इज़ विदाउट फियर,
एंड दि हेड इज हेल्ड हाई; ह्वेयर नालिज इज़ फ्री;
"ह्वेयर दि वर्ल्ड हैज नाटबीन ब्रोकेन अप इनटू फ्रैगमेंट्स बाई
नैरो डोमेस्टिक वाल्स;
"ह्वेयर वर्ड्स कम आउट फ्राम दि डेप्थ ऑफ ट्रुथ;
"ह्वेयर टायरलेस स्ट्राइविंग स्ट्रेचेज़ इट्स आर्म्स टुवर्ड्स परफेक्शन;
"ह्वेयर दि क्लीयर स्ट्रीम ऑफ रीजन हैज नाट लॉस्ट इट्स वे
इनटु दि ड्रियरी डिसर्ट सैन्ड आफ डेड हैबिट;
"ह्वेयर दि माइन्ड इज़ लेड फारवर्ड बाई दी इनटु एवर–वाइडेनिंग
थाट एंड ऐक्शन
इनटु दि हैवेन ऑफ फ्रीडम, माई फरार लेट माई कन्ट्री अवेक"

महोदय इस अवसर पर मैं एक बार फिर से आपको बधाई देता हूं।

रक्षा मंत्री (श्री प्रणब मुखर्जी) : अध्यक्ष महोदय, इस सम्मानित पद पर आपके सर्वसम्मति से चुने जाने पर प्रधान मंत्री के साथ मैं अपनी बधाई देता हूं।

महोदय, नये संविधान के अंतर्गत गठित पहली लोकसभा में आपके प्रतिष्ठित पिताजी को इस सम्मानित सभा का सदस्य होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आप 1971 से इस सभा के सदस्य हैं। आपने न केवल सभा के विचार–विमर्श में अपना योगदान दिया है अपितु आपके योगदान के कारण जब आपका नाम उत्कृष्ट सांसदों में सम्मिलित होता है, तो इससे पता चलता है कि एक बुद्धिजीवी के साथ–साथ आप कितने सहृदय व्यक्ति हैं।

महोदय, आज आप श्री विट्ठलभाई पटेल से लेकर श्री मावलंकर तक तथा ऐसे अनेक प्रतिष्ठित पूर्ववर्तियों की कतार में शामिल हो गये हैं। जिन्होंने न केवल इस पद की प्रतिष्ठा में वृद्धि की अपितु हमारे संप्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य की गरिमा और प्रतिष्ठा को भी बढ़ाया।

महोदय, यह भव्य कक्ष कई इतिहासों का साक्षी है। यदि मैं ठीक से याद कर पा रहा हूं, तो स्वतंत्रता से काफी पहले 1924 में, केन्द्रीय विधान सभा (तब इसे इसी नाम से जाना जाता था) की स्वतंत्रता का प्रश्न उठाया गया था और तब स्वराज पार्टी के नाते तत्कालीन अध्यक्ष श्री मोतीलाल नेहरू की प्रेरणा से यह प्रस्ताव पेश किया गया था कि केन्द्रीय विधान सभा को कार्यपालिका के नियंत्रण में न रखकर इसे अध्यक्ष के नियंत्रणाधीन लाया जाये। और तब से हमने इस परम्परा का निर्वाह किया है। जैसा कि प्रधान मंत्री जी ने उचित कहा है कि आप इस सभा के संरक्षक होंगे और हमारी मार्गदर्शन करेंगे। हम यह भी आशा रखते हैं कि आप अपने अनुभव से और संविधान